पाठ 2 सुभागी

वार्म अप
Points to Discuss

देश में लड़कियों की संख्या कम क्यों होती जा रही है?

हमें लड़कियों का सम्मान कैसे करना चाहिए?

माता-पिता के काम में लड़कियाँ अधिक हाथ बँटाती हैं या लड़के?

क्या आप माता-पिता और देश का नाम ऊँचा करनेवाली कुछ बेटियों के नाम बता सकते हैं?

अध्यापन-संकेत

'वार्मअप' के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ-पठन एवं अधिगम (Learning) हेतु तैयार करें। यहाँ दिए गए प्रश्न संकेत मात्र हैं। पाठ की तैयारी हेतु बच्चों से अन्य रुचिकर प्रश्न पूछकर विषय पर चर्चा करें और उनमें पाठ पढ़ने की उत्कंठा उत्पन्न करें।

Scanned with CamScanner

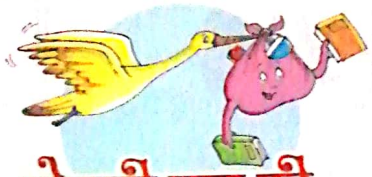

पोटली पाट की

About the Chapter

हमारे समाज में आज भी लड़के-लड़कियों में भेद किया जाता है। लड़कियों को कमज़ोर समझा जाता है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह हुआ है कि भारत में लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। आज के दौर में जब स्त्री सम्मान की बात ज़ोर-शोर से की जा रही है, मुंशी प्रेमचंद की प्रस्तुत कहानी बड़ी ही प्रासंगिक है।

तुलसी महतो अपनी लड़की सुभागी से बहुत प्यार करते थे। छोटी उम्र में भी वह घर के काम में चतुर और खेती-बाड़ी के काम में निपुण थी। उसका भाई रामू, जो उम्र में बड़ा था, बड़ा ही कामचोर और आवारा था।

बात पते की

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों द्वारा 1856 में अंग्रेज़ी सरकार ने विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया।

तुलसी ने सुभागी और रामू, दोनों की शादी कर दी। थोड़े दिन बीते। अचानक एक दिन बड़ी विपदा आ गई। सुभागी बहुत छोटी उम्र में ही विधवा हो गई। सुभागी के दुख की तो सीमा ही न थी। बेचारी को अपना जीवन पहाड़ लगने लगा था।

कुछ साल बीते। लोग तुलसी महतो पर दबाव डालने लगे कि लड़की की कहीं दूसरी शादी कर दो। आजकल कोई इसे बुरा नहीं मानता है, तो क्यों सोच-विचार करते हो?

तुलसी ने कहा- "भाई, मैं तो तैयार हूँ, लेकिन जब सुभागी भी माने। वह किसी तरह राज़ी नहीं होती।"

हरिहर ने सुभागी को समझाकर कहा- "बेटी, हम तेरे ही भले के लिए कहते हैं।"

माँ-बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा। तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?

सुभागी ने सिर झुकाकर कहा- "तुम्हारी बात समझ रही हूँ लेकिन मेरा मन शादी करने को नहीं कहता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ। जो काम तुम कहो, वह सिर-आँखों के बल करूँगी मगर शादी को मुझे न कहो।"

उजड्ड रामू बोला- "तुम अगर सोचती हो कि भैया कमाएँगे और मैं बैठी मौज करूँगी, तो इस भरोसे न रहना।"

सुभागी ने गर्व भरे स्वर में कहा- "मैंने तुम्हारा आसरा भी नहीं किया और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं।" अब सुभागी माँ-बाप के साथ ही रहने लगी।

उसने घर का सारा काम सँभाल लिया। बेचारी पहर रात से उठकर कूटने-पीसने में लग जाती, चौका-बरतन करती, गोबर थापती, खेत में काम करने चली जाती। दोपहर को आकर जल्दी-जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती। रात को कभी माँ के सिर में तेल डालती, कभी उनकी देह दबाती। जहाँ तक उसका बस चलता, माँ-बाप को कोई काम न करने देती। हाँ, भाई को न रोकती। सोचती, ये तो जवान आदमी हैं, ये काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी?

मगर रामू को यह बुरा लगता। अम्मा और दादा को तिनका तक नहीं उठाने देती और मुझे पीसना चाहती है। यहाँ तक कि एक दिन वह आपे से बाहर हो गया। सुभागी से बोला-"अगर उन लोगों का बड़ा मोह है, तो क्यों नहीं अलग लेकर रहती हो। तब सेवा करो तो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है कि मीठी। दूसरों के बल पर वाहवाही लेना आसान है। बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे।"

यदि आज के समय में कोई भाई रामू जैसा व्यवहार करे तो लोग क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे?

Scanned with CamScanner

सुभागी ने तो कुछ जवाब न दिया। बात बढ़ जाने का भय था। मगर उसके माँ-बाप बैठे सुन रहे थे। महतो से न रहा गया। बोले-"क्या है रामू, सुभागी से क्यों लड़ते हो?"

रामू पास आकर बोला- "तुम क्यों बीच में कूद पड़े, मैं तो उसको कहता था।"

तुलसी- "जब तक मैं जीवित हूँ तुम उसे कुछ नहीं कह सकते। मेरे पीछे जो चाहे करना। बेचारी का घर में रहना मुश्किल कर दिया है।"

रामू- "आपको बेटी प्यारी है, तो उसे गले बाँधकर रखिए। मुझसे तो नहीं रुका जाता।"

तुलसी- "अच्छी बात है। अगर तुम्हारी यही मर्ज़ी है, तो यही होगा। मैं कल गाँव के आदमियों को बुलाकर बँटवारा कर दूँगा। तुम चाहे अलग हो जाओ, सुभागी नहीं अलग होगी।"

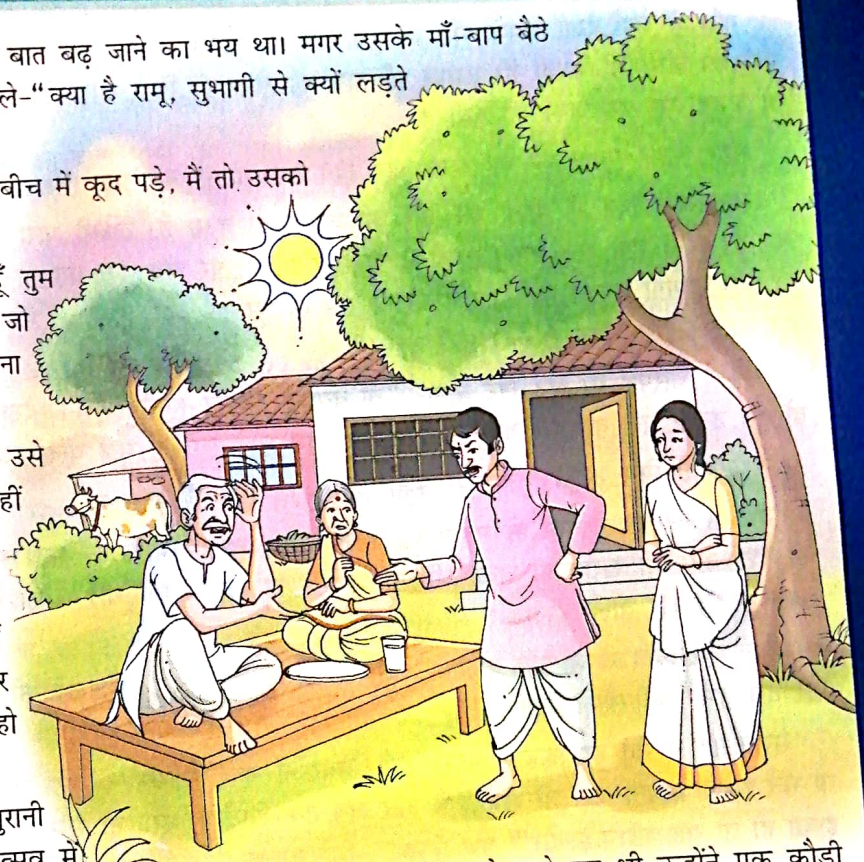

रात को तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई, जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रुपये कर्ज़ लेकर जलसा किया था, और सुभागी पैदा हुई तो घर में रुपये रहते हुए भी उन्होंने एक कौड़ी न खर्च की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय!

दूसरे दिन महतो ने गाँव के आदमियों को इकट्ठा करके कहा- "पंचो! अब रामू का और मेरा एक घर में निर्वाह नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग इंसाफ़ से जो कुछ मुझे दे दो, वह लेकर अलग हो जाऊँ। रात-दिन की किचकिच अच्छी नहीं।"

गाँव के मुखिया बाबू सजनसिंह बड़े सज्जन पुरुष थे। उन्होंने रामू को बुलाकर पूछा- "क्यों जी, तुम अपने बाप से अलग रहना चाहते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती, माँ-बाप को अलग किए देते हो? राम! राम!"

रामू ने ढिठाई के साथ कहा- "जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा है।"

यह कहता हुआ रामू वहाँ से चलता बना।

तुलसी- "देख लिया आप लोगों ने इसका मिजाज़? भगवान ने बेटी को दुख दे दिया, नहीं तो मुझे खेती-बाड़ी लेकर क्या करना था। जहाँ रहता, वहीं कमाता खाता! भगवान ऐसा बेटा बैरी को भी न दे। "लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय।"

सहसा सुभागी आकर बोली- "दादा, यह सब बँटवारा मेरे ही कारण तो हो रहा है, मुझे क्यों नहीं अलग कर देते?"

तुलसी ने कहा- "बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे, चाहे संसार छूट जाए।"

Scanned with CamScanner

गाँव में जहाँ देखो सबके मुँह से सुभागी की तारीफ़। लड़की नहीं, देवी है। दो मर्दों का काम भी करती है। उसपर माँ-बाप की सेवा भी किए जाती है। सजनसिंह तो कहते, यह इस जन्म की देवी है।

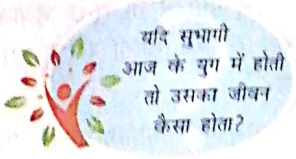

मगर शायद महतो को यह सुख बहुत दिन तक भोगना न लिखा था।

सात-आठ दिन से महतो को ज़ोर का ज्वर चढ़ा हुआ है। लक्ष्मी पास बैठी रो रही है। अभी एक क्षण पहले महतो ने पानी माँगा था, पर जब तक वह पानी लाए, तब तक उनके हाथ-पाँव ठंडे हो गए। सुभागी उनकी यह दशा देखते ही रामू के घर गई और बोली- "भैया, चलो, देखो आज दादा न जाने कैसे हुए जाते हैं। सात दिन से ज्वर नहीं उतरा।"

रामू ने चारपाई पर लेटे-लेटे कहा- "तो क्या मैं डॉक्टर-हकीम हूँ कि देखने चलूँ? जब तक अच्छे थे, तब तक तो तुम उनके गले का हार बनी हुई थीं। अब जब मरने लगे तो मुझे बुलाने आई हो?"

सुभागी ने फिर उससे कुछ नहीं कहा, सीधे सजनसिंह के पास गई।

उधर सजनसिंह ने ज्यों ही महतो की हालत सुनी, तुरंत सुभागी के साथ भागे चले आए। वहाँ पहुँचे तो महतो की दशा और भी खराब हो चुकी थी। नाड़ी देखी तो बहुत धीमी थी। समझ गए कि ज़िंदगी के दिन पूरे हो गए। सजल नेत्र होकर बोले- "अब कैसी तबीयत है?"

महतो जैसे नींद से जागकर बोले -"बहुत अच्छी है भैया! अब तो चलने की बेला है। सुभागी के पिता अब तुम्हीं हो। उसे तुम्हीं को सौंपे जाता हूँ।"

सजनसिंह ने रोते हुए कहा-"भैया महतो, घबराओ मत, भगवान ने चाहा तो तुम अच्छे हो जाओगे। सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी ही समझा है और जब तक जिऊँगा, ऐसा ही समझता रहूँगा। तुम निश्चिंत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।"

महतो ने विनीत नेत्रों से देखकर कहा- "और नहीं कहूँगा, भैया! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।"

सजन- "रामू को बुलाकर लाता हूँ। उससे जो भूल-चूक हो, क्षमा कर दो।"

महतो- "नहीं, भैया। उस पापी का मुँह मैं नहीं देखना चाहता।"

इसके बाद गोदान की तैयारी होने लगी। रामू को गाँव भर ने समझाया पर वह अंत्येष्टि करने पर राज़ी न हुआ। कहा, "जिस पिता ने मरते समय मेरा मुँह देखना स्वीकार न किया, न वह मेरा पिता है, न मैं उसका पुत्र हूँ।"

लक्ष्मी ने दाह-क्रिया की। सुभागी ने सारी व्यवस्था की। इन थोड़े से दिनों में सुभागी ने न जाने कैसे रुपये जमा कर लिए थे। जब तेरहवीं का सामान आने लगा तो गाँववालों की आँखें खुल गईं।

तेरहवीं के दिन सारे गाँव के लोगों का भोज हुआ। चारों तरफ़ वाहवाही मच गई।

पिछले पहर का समय था। लोग भोजन करके चले गए थे। लक्ष्मी थककर सो गई। केवल सुभागी बची हुई चीज़ें उठा-उठाकर रख रही थी कि ठाकुर सजनसिंह ने आकर कहा- "अब तुम भी आराम करो बेटी, सवेरे यह सब काम कर लेना।"

सुभागी ने कहा- "अभी थकी नहीं हूँ, दादा! आपने जोड़ लिया? कुल कितने रुपये खर्च हुए?"

सजन- "यह पूछकर क्या करोगी बेटी?"

सुभागी- "कुछ नहीं, यों ही?"

Scanned with CamScanner

सजन- "कोई तीन हज़ार रुपये होंगे।"

सुभागी ने सकुचाते हुए कहा- "मैं इन रुपयों की देनदार हूँ।"

पति के देहांत के बाद से ही लक्ष्मी का दाना-पानी छूट गया। सुभागी के आग्रह पर चौके में जाती, मगर कौर कंठ के नीचे न उतरता! पचास वर्ष हुए, एक दिन भी ऐसा न हुआ कि पति के बिना खाए उसने खुद खाया हो। अब उस नियम को कैसे तोड़े?

आखिर उसे खाँसी आने लगी। दुर्बलता ने जल्द ही खाट पर डाल दिया। सुभागी अब क्या करे? ठाकुर साहब के रुपये चुकाने के लिए दिलोजान से काम करने की ज़रूरत थी। यहाँ माँ भी बीमार पड़ गई। अगर बाहर जाए तो माँ अकेले रहती है। उनके पास बैठे तो बाहर काम कैसे करे? माँ की दशा देखकर सुभागी समझ गई कि इनका भी अंतिम समय आ पहुँचा। महतो को भी तो यही ज्वर था।

गाँव में और किसे फ़ुर्सत थी कि दौड़-धूप करता। सजनसिंह दोनों वक्त आते। लक्ष्मी की दशा बिगड़ती जा रही थी। यहाँ तक कि पंद्रहवें दिन वह भी संसार से विदा ले गई। सुभागी को उसने आशीर्वाद दिया-"तुम्हारी जैसी बेटी पाकर मैं धन्य हो गई। मेरा क्रिया-कर्म तुम्हीं करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।"

माता के देहांत के बाद सुभागी के जीवन का केवल एक लक्ष्य रह गया- सजनसिंह के रुपये चुकाना। तीन साल तक सुभागी ने रात को रात और दिन को दिन न समझा। उसकी कार्य-शक्ति और हिम्मत देखकर लोग दाँतों तले अँगुली दबाते थे। दिन-भर खेती-बाड़ी का काम करने के बाद वह रात को आटा पीसती। तीसवें दिन तीन सौ रुपये लेकर वह सजनसिंह के पास पहुँच जाती। इसमें कभी नागा नहीं होता।

अब चारों ओर से उसकी सगाई के पैगाम आने लगे। सभी उसको अपने घर की बहू बनाना चाहते थे। जिसके घर सुभागी जाएगी, उसके दिन फिर जाएँगे। सुभागी यही जवाब देती- "अभी वह दिन नहीं आया।"

जिस दिन सुभागी ने आखिरी किस्त चुकाई, उस दिन उसकी खुशी का ठिकाना न था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो गया।

वह चलने लगी तो सजनसिंह ने कहा-"बेटी, तुमसे एक प्रार्थना है। कहो, कहूँ, कहो न कहूँ, मगर वचन दो कि मानोगी।"

सुभागी ने कृतज्ञ भाव से कहा-"दादा, आपकी बात न मानूँगी तो किसकी बात मानूँगी?"

सजन- "मैंने अब तक तुमसे इसलिए नहीं कहा कि तुम अपने को मेरा देनदार समझ रही थीं। अब रुपये चुक गए। मेरा तुम्हारे ऊपर कोई एहसान नहीं है। बोलो कहूँ?"

सुभागी- "आपकी जो आज्ञा हो।"

सजन- "देखो इनकार न करना, नहीं तो मैं तुम्हें अपना मुँह फिर न दिखाऊँगा।"

सुभागी- "क्या आज्ञा है?"

सजन- "मेरी इच्छा है कि तुम मेरे

Scanned with CamScanner

घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो। मेरा लड़का तुम्हारे नाम का पुजारी है। तुमने उसे देखा है। बोलो, मंजूर करती हो?"

सुभागी- "बाबा, इतना सम्मान पाकर पागल हो जाऊँगी।"

सजन- "तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं बेटी। तुम साक्षात् भगवती का अवतार हो।"

सुभागी- "मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए ही करेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?"

सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा- "बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?"

—मुंशी प्रेमचंद

बात सीख की
Values

- बेटियों का सम्मान
- लड़के-लड़की का भेद न रखना
- परोपकार
- परिश्रम
- मातृ-पितृ भक्ति
- समर्पण

शब्दार्थ (Word Meanings)

निपुण = दक्ष, कुशल (perfect); **विपदा** = संकट, मुसीबत (trouble); **विधवा** = जिस स्त्री के पति की मृत्यु हो चुकी हो (widow); **उजड्ड** = गँवार, असभ्य (uncivilized); **जलसा** = रंगारंग कार्यक्रम (procession); **मिजाज़** = स्वभाव (nature); **बैरी** = शत्रु (enemy); **कुलवंती** = कुलीन, योग्य (aristocratic); **गोदान** = गाय दान करना (donation of a cow); **अंत्येष्टि** = अंतिम संस्कार (funeral); **क्रिया-कर्म** = अंतिम संस्कार (funeral); **देहांत** = मृत्यु (death); **नागा** = अवकाश (leisure); **पैगाम** = संदेश (message); **कृतज्ञ भाव** = उपकार मानने का भाव (a feel of benevolence); **देनदार** = कर्ज़दार (debtor); **भगवती** = देवी (Goddess)

अभ्यास

बात पाठ की

मौखिक (Oral Expression)

1. सुभागी के भाई का क्या नाम था?
2. किसे अपना जीवन पहाड़ लगने लगा?
3. गाँव के मुखिया का क्या नाम था?
4. किसने खुद को रुपयों का देनदार बताया?
5. सुभागी के पास किस तरह के पैगाम आने लगे?

लिखित (Written Express

● बहुविकल्पीय प्रश्न (M

सही उत्तर के सामने

1. गाँव के लोग तुल
   (क) रामू को अ
   (ग) खेत खरी
2. 'लड़के से लड़
   (क) तुलसी म
   (ग) सजन सि
3. तुलसी महतो
   (क) मधुमेह
   (ग) पीलिया

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभागी पर क
2. रामू किस त
3. तुलसी महत
4. सजन सिंह

● दीर्घ उत्तरीय

1. सुभागी के
2. माता-पित
3. तुलसी म
4. 'बाबू स
5. सुभागी
6. गाँव के

● अर्थ-ग्रहण

सुभागी ने
नहीं है। मै
मत कहो।"

Scanned with CamScanner

लिखित (Written Expression)

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए–

1. गाँव के लोग तुलसी महतो पर क्या दबाव डाल रहे थे?
   (क) रामू को अलग करने का ◯ (ख) घर बनवाने का ◯
   (ग) खेत खरीदने का ◯ (घ) सुभागी की शादी करने का ◯
2. 'लड़के से लड़की भली जो कुलवंती होय' यह किसने कहा?
   (क) तुलसी महतो ने ◯ (ख) लक्ष्मी ने ◯
   (ग) सजन सिंह ने ◯ (घ) हरीहर ने ◯
3. तुलसी महतो किस रोग से पीड़ित थे?
   (क) मधुमेह ◯ (ख) उच्च रक्तचाप ◯
   (ग) पीलिया ◯ (घ) ज्वर ◯

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. सुभागी पर क्या विपदा आ पड़ी थी?
   .....
2. रामू किस तरह का व्यक्ति था?
   .....
3. तुलसी महतो ने पंचों से क्या कहा?
   .....
4. सजन सिंह ने तुलसी महतो को क्या वचन दिया?
   .....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

1. सुभागी के प्रति रामू का व्यवहार कैसा था?
2. माता-पिता के साथ सुभागी का दिन कैसे गुज़रता था?
3. तुलसी महतो ने रामू को अलग करने का निश्चय क्यों किया?
4. 'बाबू सजन सिंह सज्जन पुरुष थे।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
5. सुभागी ने सजन सिंह का कर्ज़ कैसे चुकाया?
6. गाँव के लोग सुभागी की तारीफ़ क्यों करते थे?

अर्थ-ग्रहण संबंधी प्रश्न (Questions Based on Comprehension)

सुभागी ने सिर झुकाकर कहा, "तुम्हारी बात समझ रही हूँ, लेकिन मेरा मन शादी करने को नहीं कहता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सबकुछ झेलने को तैयार हूँ। जो काम तुम कहो, वह सिर-आँखों के बल करूँगी, मगर शादी करने के लिए मुझे मत कहो।"

Scanned with CamScanner

1. सुभागी कौनसी बात समझ रही थी?
2. सुभागी क्यों सब कुछ झेलने के लिए तैयार थी?
3. 'सिर आँखों के बल' मुहावरे का अर्थ लिखिए। .....
4. विशेषण बनाइए– ऊपर – ..... डर – .....

बात भाषा की

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) पुत्र – ....
(ख) नेत्र – ....
(ग) दिन – ....
(घ) संसार – ....
(ङ) बहू – ....
(च) घर – ....

* जो शब्दांश मूल शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
जैसे– अ + काल = अकाल, अप + मान = अपमान, प्रति + दिन = प्रतिदिन आदि।

2. निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए–

आ + राम = आराम

(क) जल – ..... + ... = ...
(ख) पुत्र – ..... + ... = ...
(ग) अधिक – ..... + ... = ...
(घ) अंत – ..... + ... = ...

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

(क) जन्मोत्सव – ..... + ...
(ख) देहांत – ..... + ...
(ग) धर्मार्थ – ..... + ...
(घ) पूर्वोत्तर – ..... + ...
(ङ) परमात्मा – ..... + ...
(च) सेवार्थ – ..... + ...

* हम जानते हैं कि संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जानेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे– मोहित मेला देखने गया। वह अपने लिए खिलौने लाया।
यहाँ 'मोहित' के स्थान पर वह शब्द आया है। ये शब्द सर्वनाम है। सर्वनाम के छह भेद हैं–
1. पुरुषवाचक– मैं, मेरा, मुझे, तुम, तुम्हारा, हम, हमारा, आप आदि।
2. निश्चयवाचक– वह, वे, यह, ये आदि।
3. अनिश्चयवाचक– कुछ, बहुत कुछ, सब कुछ, कुछ भी, कोई, आदि।
4. संबंधवाचक– जो.....वह, जो.....सो आदि।
5. प्रश्नवाचक– कौन, कब, कहाँ, कैसे, क्या, किसको आदि।
6. निजवाचक– अपने-आप, स्वयं, खुद, निज आदि।

Scanned with CamScanner

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए–

(क) छोटी उम्र से ही वह घर के काम में निपुण थी।

(ख) हम तो ही भले के लिए कह रहे हैं।

(ग) अगर तुम्हें अधिक मोह है तो अपने आप इनकी सेवा करो।

(घ) भविष्य में कौन तुम्हारा साथ देगा?

(ङ) सुभागी से मिलने कोई आया था।

5. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) आपे से बाहर होना –

(ख) गले का हार बनना –

(ग) दाँतों तले अँगुली दबाना –

(घ) खुशी का ठिकाना न रहना –

बारी अब करने की

नाट्य मंचन कीजिए

* 'सुभागी' कहानी को नाटक के रूप में लिखकर मंच पर प्रस्तुत कीजिए।

परिचर्चा आयोजित कीजिए

* 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' विषय पर अपने साथियों के साथ मिलकर एक परिचर्चा (Group Discussion) का आयोजन कीजिए।

तालिका बनाइए

* हमारे देश में लड़कों की संख्या की तुलना में लड़कियों की संख्या कम है। कई राज्यों में तो यह अनुपात निरंतर बिगड़ता जा रहा है। यह एक गंभीर समस्या है। अपने शिक्षक/शिक्षिका या इंटरनेट की सहायता से इस विषय में जानकारी प्राप्त करके एक तालिका बनाइए। आभार– www.wikipedia.org/wiki/indian_states_and_territories_ranking_by_sex_ratio

परियोजना तैयार कीजिए

* 'कन्या भ्रूणहत्या' हमारे समाज की एक गंभीर समस्या है। समाज की इस मानसिक विकृति पर इंटरनेट पर ढेर सारी सामग्री उपलब्ध है। आज अनेक सरकारी और गैर-सरकारी संगठन इसके विरुद्ध अभियान चला रहे हैं। इस विषय पर सामग्री जुटाकर एक सचित्र परियोजना (Project) तैयार कीजिए।

Scanned with CamScanner